RIGHT TO EDUCATION

SARVA SHIKSHA ABHIYAN

EDUCATION FOR ALL

उत्तराखण्ड राज्य

कोहिनूर

(विद्यालय बाल पत्रिका)

राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुथ्या

सी0आर0सी0- बुगाला, ब्लॉक- नरेन्द्र नगर, जिला- टिहरी गढ़वाल

विद्यालय को मिली पहचान एवं प्रशंसा

अमर उजाला | अपना ऋषिकेश

अंग्रेजी पैटर्न से बदली सरकारी स्कूल की तस्वीर

जान जोखिम में डालकर संवार रहे भविष्य

एक पत्थर की सीढ़ी चढ़कर जाने को मजबूर राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुल्या के छात्र

डॉ. कलाम को दी श्रद्धांजलि

रायवाला। प्रतीतनगर स्थित सोपति देवी ... स्कूल में पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को पौधे रोपकर श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर शोभा, नीता, नीलम, ... अनिता, हर्ष, विमला ... विद्यालय कुल्या में सभी ... पाहेली, रेखा पुण्डीर, ...

छुट्टी छोड़ भविष्य संवार रहे कर्मयोगी

स्कूल में संसाधन जुटाने को आगे आए ग्रामीण

विज्ञान को बताया जीवन का सार

नई टिहरी: जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान नई टिहरी में विज्ञान विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें प्रशिक्षु शिक्षकों ने आपदाओं और सूचना तकनीकी का रोचक तरीके से प्रस्तुतिकरण किया। गोष्ठी का शुभारंभ संस्थान के प्राचार्य उदय सिंह कंडारी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। उन्होंने विज्ञान को जीवन का सार बताया। गोष्ठी में उत्तराखंड के औषधीय पौधे, प्राकृतिक आपदाएं, विज्ञान शिक्षण में सूचना एवं तकनीकी सार विषय पर चर्चा की गई। डायट प्रवक्ता ममता राणा ने विज्ञान और तकनीकी के द्वारा मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया। साथ ही आज के दौर में विज्ञान के ...

प्रधानाध्यापक की पहल पर समर कैंप आयोजित

... सार बताया

नई टिहरी। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान नई टिहरी में ... गोष्ठी का आयोजन ... प्रशिक्षु शिक्षकों ने आपदा ... तकनीकी का रोचक ... किया।

गोष्ठी का उद्घाटन ... कंडारी ने किया। उन्होंने ... जीवन का सार बताया। उत्तराखंड के औषधीय पौधे, आपदाएं, विज्ञान शिक्षण में तकनीकी सार विषय पर चर्चा ... डायट प्रवक्ता ममता राणा ने ... तकनीकियों के द्वारा मानव ... पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण, साथ ही आज दौर में विज्ञान को ...

दोगी के प्राथमिक विद्यालय कुल्या को अपने निजी प्रयासों से चमकाने में लगे शिक्षक प्रमोद बने हैं प्रेरणा

अतिदुर्गम में शिक्षा की इबारत लिख रहे गुरुजी

सपनों की उड़ान कार्यक्रम 2015-16 में सम्मान

जिला शिक्षा अधिकारी बेसिक एवं प्राचार्य डायट नई टिहरी द्वारा प्रशंसा

जिलाधिकारी महोदया द्वारा प्रशंसा

Printed by : SAPNA PRESS, Rishikesh 0135-245 5555

संदेश

शैक्षिक विकास के पथ पर प्रारम्भिक शिक्षा का दौर बच्चे के जीवन में महत्वपूर्ण होता है। जो कि बच्चे को भविष्य का आदर्श नागरिक बनाने में उसकी आधारशिला के रूप में कार्य करता है। प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत् शिक्षकगण बच्चों को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने के साथ लगातार ऐसे प्रयास भी करते रहते हैं जिससे विद्यालय का शैक्षिक, सामाजिक एवं भौतिक वातावरण आकर्षक एवं आनन्ददायक बन सके। नवाचार के रूप में ऐसा ही प्रयास राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुण्या के प्रभारी प्रधानाध्यापक श्री प्रमोद कुमार चमोली के द्वारा विद्यालय बाल पत्रिका 'कोहीनूर' को प्रकाशित कर किया है। मैं उनके इस प्रयास की सराहना करता हूँ।

विद्यालय बाल पत्रिका बच्चों के अंदर निहित विभिन्न गुणों के प्रदर्षन का एक सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा बच्चें अपनी कल्पनाओं को, सपनों को, समझ, ज्ञान एवं सृजनशीलता को स्वतन्त्रा और सुरन्दता के साथ एक सादे कागज पर उकेर सकते हैं।

मैं विद्यालय के बच्चों, अध्यापकों, विद्यालय प्रबन्ध समिति के पदाधिकारियों एवं समस्त ग्रामीणों को बाल पत्रिका 'कोहीनूर के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ। आशा है कि विद्यालय के इस अनुकरणीय प्रयास से अन्य विद्यालय भी लाभान्वित होंगे।

'विद्यालय बाल पत्रिका 'कोहीनूर' के सफल प्रकाशन एवं विमोचन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

चेतन प्रसाद नौटियाल
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्था
नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल

शुभकामना संदेश

उत्तराखण्ड राज्य

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुथ्या विकासखण्ड नरेन्द्रनगर जिला टिहरी गढवाल द्वारा विद्यालय की पत्रिका कोहिनूर प्रकाशित की जा रही है।

आज सरकारी विद्यालय अपनी घटती छात्र संख्या एवं गुणवत्ता में कमी के कारण जनसामान्य में अविश्वास की समस्या से जूझ रहे हैं, ऐसे में विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन एवं प्रचार प्रसार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके द्वारा विद्यालय के शैक्षिक एवं शिक्षणोत्तर क्रिया–कलापों, छात्रों के चहुमुखी विकास, विद्यालय संचालन में सामुदायिक सहभागिता आदि से जनसामान्य को अवगत कराया जा सकता है। विद्यालय पत्रिका अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं, शिक्षकों, जन समुदाय के विचारों, योजनाओं, उपलब्धियों एवं उद्देश्यों को प्रदर्शित करने के लिए प्रतिबिम्ब का कार्य करती है। इसके अतिरिक्त विद्यालय पत्रिका के माध्यम से छात्रों में निहित विविध प्रतिभाओं को पहचाने एवं उनमें निखार लाने का अवसर भी मिलता है जिससे भविष्य के लिए नई राहें प्रदर्शित की जा सकती हैं। विद्यालय पत्रिका एक ऐसा कैनवास है जो बाल मन में उमड़–घुमड़ रही कल्पनाओं, विचारों, सपनों, उम्मीदों एवं आकांक्षाओं को रंग–बिरंगे आयाम देने का कार्य करती है।

मैं विद्यालय के समर्पित व कर्मठ प्रधानाध्यापक श्री प्रमोद चमोली जी सहित उनकी सहयोगी अध्यापिका, स्थानीय समुदायजन एवं सभी स्नेहशील छात्रों को इस सराहनीय व प्रेरणादायी कार्य को वास्तविकाता के धरातल पर सफलता पूर्वक प्रस्तुत करने के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

16/08/16
डा0 अशोक कुमार गुसाई
जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा0शि0)
टिहरी गढ़वाल, नई टिहरी

डा0 अशोक कुमार गुसाई
जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा0शि0)
टिहरी गढ़वाल, नई टिहरी

"रचनात्मकता भविष्य में सफलता की कुंजी है, प्राथमिक शिक्षा ही वह साधन है जो बच्चों में सकारात्मकता लाती है।"
– डा0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम

शुभकामना संदेश

उत्तराखण्ड राज्य

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि रा0प्रा0वि0 कुथ्या द्वारा अपने विद्यालय की पत्रिका प्रकाशित की जा रही है।

विद्यालय की पत्रिका एक मंच है जहाँ विद्यालय में अध्ययनरत छात्र, कार्यरत् शिक्षक, एस0एम0सी0 सदस्य व अन्य सम्बन्धित समुदाय जन अपनी सृजनशीलता, विचार, योजनाओं तथा उपलब्धियों को अभिव्यक्ति प्रदान कर सकते हैं साथ ही अपनी सक्रियता व जागरूकता को भी प्रदर्शित कर सकते हैं। आज जहाँ सरकारी विद्यालय छात्रों की घटती संख्या व शैक्षिक गुणवत्ता में कमी के कारण जनसामान्य के घटते विश्वास की समस्या से जूझ रहे हैं ऐसे में विद्यालय पत्रिका के प्रकाशन एवं प्रचार प्रसार द्वारा विद्यालय के शैक्षिक एवं शिक्षणोत्तर क्रियाकलापों, छात्रों के चहुमुखी विकास, विद्यालय संचालन में सामुदायिक सहभागिता आदि कार्यों से जनसामान्य को अवगत कराकर सरकारी विद्यालयों में घटते विश्वास को पुनः प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के माध्यम से छात्रों में निहित विविध प्रतिभाओं की पहचान कर व उसमें निखार लाकर छात्रों छात्रों के भविष्य के लिए नई राहें प्रदर्शित की जा सकती हैं। वास्तव में विद्यालय पत्रिका का प्रतिबिम्ब होने के साथ एक ऐसा कैनवास है जो बामन में उमड़–घुमड़ रहे विचारों, सपनों, उम्मीदों, आकांक्षाओं व कल्पनाओं के बहुरंगी चित्रों को खूबसूरती से समेटे हुए है।

मैं विद्यालय के समर्पित व कर्मठ प्रधानाध्यापक श्री प्रमोद चमोली जी एवं उनके सहयोगी शिक्षकगण, स्थानीय समुदायजन व सर्वप्रमुख सभी छात्रों को इस अत्यन्त सराहनीय व प्रेरणादायक कार्य को वास्तविकता के धरातल पर सफलतापूर्वक प्रस्तुत करने के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ देता हूँ।

पंकज कुमार उप्रती
उपशिक्षा अधिकारी
नरेन्द्र नगर, टिहरी गढ़वाल

एक छात्र की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता होती है - प्रश्न पूछना, उन्हें प्रश्न पूछने दें।
- डा0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम

भूमिका

बाल पत्रिका 'कोहिनूर' हमारे विद्यालय के बच्चों के लगभग एक वर्ष के प्रयास का परिणाम है। इस पत्रिका का उद्देश्य विद्यालय के बच्चो के विचारों, सपनों, व कल्पनाओं के रंगीन चित्रों को कैनवास पर उतारना है, साथ ही विद्यालय में हो रही शैक्षणिक गतिविधियों एवं क्रियाकलापों आदि से जनसमुदाय को अवगत कराना है। चूँकि विद्यालय में पढ़ रहे कुछ छोटे बच्चे हैं इसलिए उनकी मौलिक रचनाओं के अलावा कुछ तथ्य एवं जानकारियाँ गूगल आदि से भी एकत्र की गई हैं। पत्रिका की प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं सहयोग मुझे सपना प्रिटिंग प्रेस ऋषिकेश के संचालक एवं मेरे प्रिय मित्र श्री पंकज जायसवाल जी से मिला।

पत्रिका का शीर्शक – 'कोहिनूर' हमारे गाँव कुथ्या के एक समाज सेवी श्री रघुवीर 'मिन्टू' चौहान जी ने सुझाया। वास्तव में ग्रामीण एवं पहाड़ी परिवेश में न जाने कितने कोहिनूर छिपे हैं जिन्हें हम पत्थर समझ रहे हैं। आवश्यकता एक प्रयास और उन्हे तराशने की है। आओ हम सब मिलकर इन पावन कार्य में हाथ बटाएं और पत्थरों में छुपे रत्नों को कोहिनूर बनाएं।

मैं विद्यालय विकास में श्रीमती सरस्वती चमोली, श्री रोबिन मान, श्री अर्जुन कबसूड़ी, श्री सूरत सिंह , श्री हरिश तिवाड़ी, श्री भरत सिंह, श्री धीरेन्द्र सिंह, श्री सुल्तान सिंह, श्री बलवीर चौहान, श्री नमित रमोला, श्री राजेश चौहान, श्री अनिल महर, श्री महावीर उपाध्याय, श्री सरदार सिंह पुण्डीर, श्री कान सिंह पुण्डीर, श्री सुदेश कंडवाल, श्री जितेन्द्र रावत, श्री विरेन्द्र रयाल, श्री जबर सिंह पंवार, श्री एस.एस नेगी सहित जि0प0 सदस्य, बडीर श्री सुमन पुण्डीर, जि0प0 सदस्य ऋषिकेश पंचम श्रीमती सुनीता उपाध्याय, जि0प0 सदस्य, रायवाला श्रीमती अनिता कंडवाल, जि0प0 सदस्य, श्यामपुर श्री देवेन्द्र नेगी एवं समस्त कुथ्या ग्राम वासियों के विशेष सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

आशा है आपको बच्चों की मौलिक रचनाएँ पढ़कर आनन्द आयेगा और उनका मनोबल बढ़ाने में आप कोई कसर नहीं छोड़ेगे।

प्रमोद कुमार चमोली

प्रभारी प्रधानाअध्यापक

रा0प्रा0वि कुथ्या, नरेन्द्र नगर

जिला – टिहरी गढ़वाल

आभार.....

मैं आभार व्यक्त करना चाहती हूँ विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री प्रमोद चमोली जी का जिनके अथक प्रयास और प्रेरणा से विद्यालय के बच्चों ने इतना सुंदर एवं सराहनीय कार्य किया। आशा है पुस्तक को पढ़कर आपको आनन्द आयेगा। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन एवं विमोचन के लिए अपने समस्त एस0एम0सी0 सदस्यों, विद्यालय के शिक्षकों, विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देती हूँ। आप सभी के सहयोग से राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुथ्या लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है। विद्यालय में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सराहनीय प्रयास किए जा रहे है। मैं पत्रिका के माध्यम से ग्राम प्रधान पुर्वाला श्रीमती सुलोचना देवी जी, ग्राम प्रधान मिण्डाथ श्रीमती धनेश्वरी देवी जी, ग्राम प्रधान ससमण श्री हरेन्द्र कबसूड़ी जी, क्षेत्र पंचायत सदस्य श्रीमती सुनीता महर जी सहित उन सभी सज्जनों एवं समाज सेवी संस्थाओं का भी आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिन्होंने समय समय पर विद्यालय के विकास में योगदान दिया है।

श्रीमती प्रमिला देवी
अध्यक्ष
विद्यालय प्रबन्धन समिति
रा0प्रा0वि0 कुथ्या

उठो जागो, अपने लक्ष्य की तरफ अग्रसर हो जाओ
और तब तक ना रूको जब तक वो तुम्हे प्राप्त ना हो जाय।
- स्वामी विवेकानन्द

अनमोल वचन

श्रीमती रेखा पुण्डीर
सहायक अध्यापिका
रा0प्रा0वि0 कुथ्या

- अपनी क्षमता के बल पर दुनियाँ को बताओ कि आप कौन हो, तभी दुनियॉ आपको पहचान पाएगी।

  – स्टीव जॉब्स

- माना कि अँधेरा घना है, लेकिन दिए जलाना कहाँ मना है।

  – प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

- बड़ा सोचो, जल्दी सोचो, आगे सोचो। विचारों पर किसी का एकाधिकार नहीं है।

  – धीरूभाई अंबानी

- जीवन में सबसे बड़ी खुशी उस काम को करने में है, जिसे लोग कहें कि तुम नहीं कर सकते हो।

  – अज्ञात

- जितना कठिन संघर्श होगा जीत उतनी ही शानदार होगी।

  – शोमस पेन

- जब जब जग उस पर हॅसा है, तब–तब उसी ने इतिहास रचा है।

  – अज्ञात

- युवाओं को मेरा संदेश है कि अलग तरीके से सोचें, कुछ नया करने का प्रयत्न करें, अपना रास्ता खुद बनाए, असंभव को हांसिल करें।

  –डा0 ए0पीवजे0 अब्दुल कलाम

- आपके सपने सच होने से पहले आपको सपने देखने होंगे।

  – डा0 ए0पीवजे0 अब्दुल कलाम

- सपने वो नहीं जो आप सोते वक्त देखते हैं, सपने वो होते है जो आपको सोने नहीं देते।

  – डा0 ए0पीवजे0 अब्दुल कलाम

मेरा विद्यालय

आशीष सिंह चौहान
कक्षा–4

मेरा विद्यालय सबसे प्यारा सबसे अच्छा
खुश रहता है बच्चा–बच्चा
गुरूजी पढ़ाते खूब समझा के
हम भी पढ़ते मन लगा के
नहा धोकर हैं रोज आते
सुन्दर–सुन्दर प्रार्थना गाते
पीटी, योग, ध्यान भी करते
खेलकूद और मौज भी करते
कंप्यूटर, टीवी, प्रोजेक्टर से भरपूर
कक्षाऐं हैं हम बच्चों के अनुकूल
दीवारें पर सुन्दर चित्र बने हैं
सुपर मैन और छोटा भीम मित्र बने हैं
सुलेख पर मिलता है रोज एक तारा
मेरा विद्यालय सबसे प्यारा सबसे न्यारा

चिंतन

झॉक रहे हैं इधर–उधर सब।
अपने अंदर झांके कौन?
ढूंढ रहें हैं दुनिया में कमियाँ।
अपने मन में ताके कौन?
दुनियॉ सुधरे सब चिल्लाते।
खुद को आज सुधारे कौन?
पर उपदेश कुशल बहुतेरे।
खुद पर आज विचारे कौन?
हम सुधरें तो जग सुधरेगा।
यह सीधी बात उतारे कौन?

जितेन्द्र सिंह राणा
कक्षा–5

कु0 सुमन चौहान
कक्षा–5

हमारा व्यवहार गणित के 'शून्य' की तरह होना चाहिए
जो स्वयं कोई कीमत नहीं रखता लेकिन दूसरों के साथ जुड़ने पर उसकी 'कीमत' बढ़ा देता है। – **अज्ञात**

काम की बात

अनीष सिंह चौहान
कक्षा–5

मनुष्य को पॉच ऋण चुकाने होते हैं :–

1. माता का ऋण
2. पिता का ऋण
3. गुरू का ऋण
4. धरती का ऋण
5. धर्म का ऋण

इन ऋणों को चुकाने के निम्न उपाय बताए गए हैं :–

1. माता का ऋण चुकाने के लिए कन्यादान करना चाहिए।
2. पिता का ऋण चुकाने के लिए संतान उत्पत्ति करनी चाहिए।
3. गुरू का ऋण चुकाने के लिए लोगों को शिक्षित करना चाहिए।
4. धरती का ऋण चुकाने के लिए खेती करें और पेड़ लगाने चाहिए।

मोर मचाए शोर

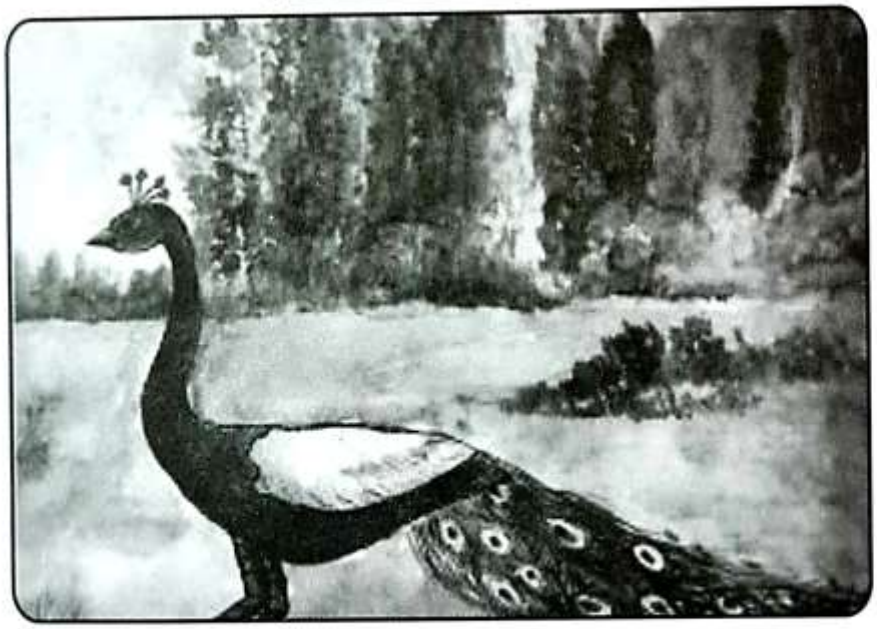

कु0 अम्बिका
कक्षा–3

जिन्दगी में आप जो कुछ करना चाहते हैं वो जरूर कीजिये, ये मत सोचिये कि लोग क्या कहेंगे। क्योंकि लोग तो तब भी कुछ कहते हैं, जब आप कुछ नहीं करते।। – **ओशो**

मेरा गाँव

कु0 शीतल चौहान
कक्षा - 4

मेरे गाँव का नाम कुथ्या है। यह टिहरी जिले के नरेन्द्रनगर ब्लॉक में, ऋषिकेश से लगभग 60 किमी दूर स्थित एक पहाड़ी पर बसा है। लगभग 400 की जनसंख्या वाले इस गॉव में अब लगभग 100 लोग ही रहते हैं। शेष सभी लोग जीवन यापन के लिए शहरों की ओर चले गए हैं। यहाँ एक प्राथमिक विद्यालय हैं। मुख्य गाँव में पानी के दो प्रमुख स्रोत हैं जबकि सल्याल और मथ्यल्या कुथ्या के लोगों को काफी दूर तक सिर पर पानी ले जाना पड़ता है। यहाँ पर बहुत अच्छी फसलें होती थी लेकिन पिछले एक–दो वर्षों में बंदर एवं अन्य जंगली जानवरों ने इस पर असर डाला है जिस कारण अब लोग खेती से विमुख हो रहे हैं। यहॉ प्रमुखतः अदरक, हल्दी, आलू, प्याज, दालें, मक्की, धान, गेहूँ, झंगोरा, एवं कोदा आदि की फसले उगाई जाती है। यहॉ का मुख्य बाजार ऋषिकेश शहर है। यहाँ एक सर्विस बस सहित कुछ छोटी गाड़ियां चलती है जो सुबह ऋषिकेश जाती है और शाम को वापस आ जाती है। हमारे गाँव में रास्तों की समस्या है हालांकि अब कुछ रास्ते निर्मित हो रहे है।

सुन्दर प्राकृतिक दृश्य, हरे भरे पहाड़, सीढ़ीदार खेत, स्वच्छ वातावरण, सादा जीवन यहाँ की खूबियां हैं। लेकिन मोबाइल नेटवर्क, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, यातायात के साधन, पैदल मार्ग जैसी अति आवश्यक मानी जाने वाली सुविधाओं से आज भी हमारा गाँव वंचित है। लेकिन मुझे लगता है कि इस गॉव के निवासी साधारण जीवन व्यतीत करते हुए भी बहुत खुश हैं।

मेरे गाँव का मानचित्र

शुभम चौहान
कक्षा–5

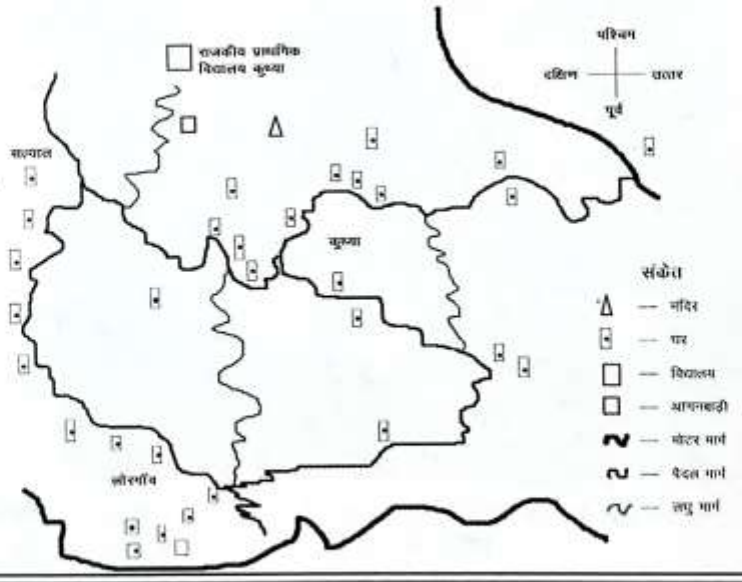

राहुल चौहान
कक्षा –5

रोपणीं - स्मरण

कु0 अनुसूया
कक्षा–5

आज हमारी रोपणीं है। मेरे मम्मी और पापा सुबह जल्दी उठ गए थे। मेरे पापा ने बैलों को घास खिलाया और मेरी मम्मी ने रोपणीं लगाने वालों के लिए नाष्ता बनाया। हम भी सुबह जल्दी उठ गए थे। आज हम भाई बहन स्कूल नहीं गए क्योंकि हम भी रोपणीं लगाने जा रहे हैं। दीदी आसपास की चाची, बडी–बडा को रोपणीं में आने के लिए बोलने गई। पापा ने बैल खोले और कन्धे पर जुआ रखा, मम्मी ने हल को सिर पर उठाया और खेत की ओर चल पड़े। जाते–जाते मुझे और दीदी को थोड़ी देर बाद चाय बनाकर नाष्ता खेत में लाने के लिए कहा। हम खेत में जाने को उत्सुक थे इसलिए जल्दी ही चाय बनाई और नाष्ता लेकर लेकर खेत में चले गए। खेत पानी से लबालब भरे थे। विमला चाची, छेणी बडी, सोहना बडी आदि महिलाएँ एक खेत से धान की पौध उखाड़ रहीं थी। पापा खेत में हल लगा रहे थे एक खेत रोपणी के लिए तैयार भी कर चुके थे। हमने नाष्ता खेत के एक कोने में रखा और उखाड़ी गई पौध को कीचड़ से लबालब भरे खेत में डालने लगे। मेरे साथ मेरा जुडुवा भाई षुम्मा और अंकित, भी पौध फैंक रहे थे। फिर माँ ने सभी को नाष्ते के लिए आवाज लगाई। सभी अपने अपने काम छोड़कर नाष्ते के लिए एक जगह पर एकत्र हो गए। सभी ने नाष्ता किया, हलवा खाया और चाय पी। इसके तुरन्त बाद सभी ने अपने अपने मोर्चे संभाल लिए। बाद में कुछ महिलाएँ रोपणीं लगाने खेत में आ गई और पंक्तिबद्ध होकर खेत के एक छोर से दूसरे छोर तक धान की पौध रोपती चली गई। दोपहर लगभग दो बजे तक हमारे खेतों में रोपणीं सक ली गई। और हम सब कीचड़ से लतपथ घर की और आ गए। लेकिन दिन भर हमें खूब मजा आया।

सूरजमुखी

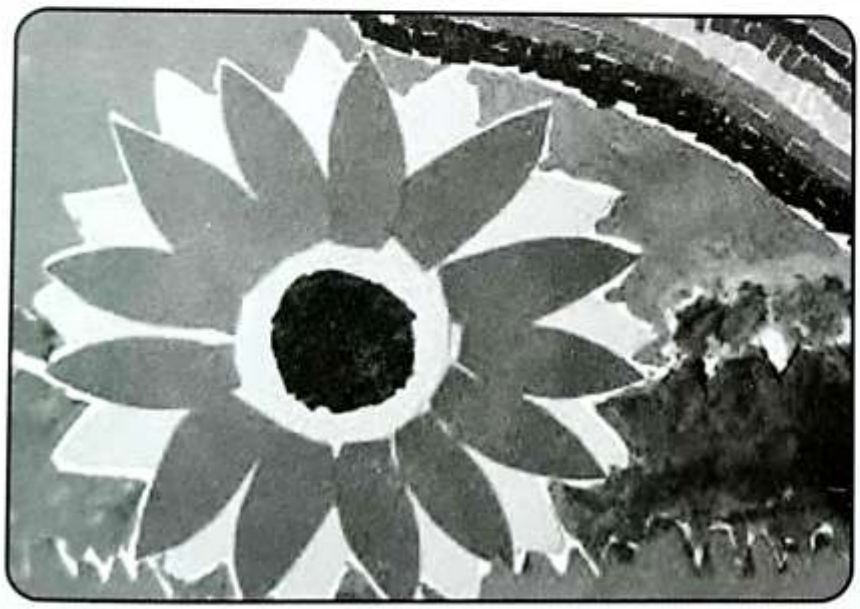

शिवम
कक्षा – 3

हमारे राज्य प्रतीक

सुमित एवं आकाश
कक्षा–2

हमारा राज्य पक्षी – मोनाल

हमारा राज्य वृक्ष – बुराँश

हमारा राज्य पशु – कस्तूरी मृग

हमारा राज्य पुष्प – ब्रह्म कमल

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

अनीश एवं कु० अम्बिका
कक्षा–2

हमारा राष्ट्रीय ध्वज – तिरंगा

हमारा राष्ट्रीय पुष्प –कमल

हमारा राष्ट्रीय फल – आम

हमारा राष्ट्रीय खेल – हॉकी

हमारा राष्ट्रीय वृक्ष – बरगद

हमारा राष्ट्रीय पशु – बाघ

हमारा राष्ट्रीय गान – जन गण मन

हमारा राष्ट्रीय नदी – गंगा

हमारा राष्ट्रीय गीत – वंदे मातरम्

हमारा राष्ट्रीय मुद्रा – रूपया

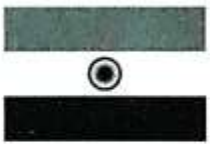

सत्यमेव जयते

₹

उत्तराखण्ड एक नजर में

देश का 27 वाँ राज्य
राज्य का गठन – 9 नवम्बर 2000
कुल क्षेत्रफल – 53,483 वर्ग किमी
कुल वन क्षेत्र – 35,651 वर्ग किमी
राजधानी – देहरादून (अस्थाई)
सीमाएं
अन्तर्राष्ट्रीय – चीन एवं नेपाल
राष्ट्रीय – उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश
उच्च न्यायालय – नैनीताल
प्रति व्यक्ति आय – 1,15,632 रूपये वार्षिक
प्रशासनिक इकाई
मण्डल – 02
कुल जिले – 13
तहसील – 100
उप तहसील – 03
विकासखण्ड – 95
न्याय पंचायत – 670
ग्राम पंचायत – 7555
कुल ग्राम – 16793
नगर निगम – 06
नगर पालिका परिषद – 31
नगर पंचायत – 38
छावनी परिषद – 09
लोक सभा संसदीय क्षेत्र – 05
राज्य सभा संसदीय क्षेत्र – 03
विधानसभा क्षेत्र – 70
उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या – 1,00,86,292
(वर्ष 2011 जनगणना के अनुसार)
पुरूष – 51,37,773
महिलाएं – 49,48,519
लिंग अनुपात – 963 : 1000 (महिला : पुरूष)
टिहरी जनपद की कुल जनसंख्या – 6,18,931
पुरूष – 2,97,986
महिला – 3,20,945
घनत्व – 170

कु0 अनामिका, नीरज, कु संजना
कक्षा–1 कक्षा–4 कक्षा–3

उत्तराखण्ड राज्य

चन्दू मैने सपना देखा

कु0 प्रीति चौहान
कक्षा–5

चंदू मैने सपना देखा, उक्षल रहे तुम ज्यों हिरनौटा
चन्दू मैने सपना देखा, महुआ से हूँ पटना लौटा
तुम्हे खोजते बद्रीबाबू, खेलकूद में हो बेकाबू
कल परसों हो छूट रहे हो, खूब पतंगे लूट रहे हो
लाये हो तुम नया कलैंडर, तुम हो बाहर, मैं हूँ बाहर
महुआ से पटना आये हो, मेरे लिए शहद लाये हो
फैल गया है सुयश तुम्हार, तुम्हे जागता भारत सारा
तुम तो बहुत बड़े डाक्टर हो, अपनी ड्यूटी में तत्पर हो
इम्तिहान में बैठे हो तुम, पुलिस भवन में बैठे हो तुम
लाये हो तुम नया कलैंडर

जरा हँस लें

सपना चौहान
कक्षा–5

1- कक्षा 1 के बच्चे को परीक्षा में 0 मिला।
पिता गुस्से से - यह क्या है ?
बच्चा - मैम के पास स्टार खत्म हो गये तो उन्होंने मून दे दिया।

2- मास्टर - नदी में नींबू के पेड़ से नींबू कैसे तोड़ोगे ?
छोटू - जी चिड़िया बनकर।
मास्टर - तुझे चिड़िया कौन बनायेगा ?
छोटू - जो नदी में पेड़ लगायेगा।

3- टीचर - सबसे चतुर जानवार कौन है ?
पप्पू - हिरन
टीचर - कैसे ?
पप्पू - इसने सतयुग में राम को फँसाया और कलयुग में सलमान को।

विगत दो वर्षों में विद्यालय में किये गये कार्यों का विवरण

मैं प्रमोद कुमार चमोली, राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुथ्या में सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत् हूँ। मैंने इस विद्यालय में दिनांक 08 अगस्त 2013 को कार्यभार ग्रहण किया था। तब से अब तक लगभग दो वर्ष आठ माह का समय व्यतीत हो चुके हैं। इस अवधि में मैंने विद्यालय के भौतिक, शैक्षणिक और सामाजिक पक्ष को बेहतर, मजबूत और प्रभावशाली बनाने की दिशा में कुछ ठोस एवं कारगर कदम उठाए, जिसके परिणाम स्वरूप आज रा0प्रा0वि0 कुथ्या क्षेत्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में सफल रहा है।

आज से लगभग दो वर्ष पूर्व जब मैंने विद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया तो विद्यालय की स्थिति उस चित्र से बहुत ही पृथक थी जो किसी विद्यालय के लिए मेरे मानस पटल में बनी थी।

यह विद्यालय ऋषिकेश – श्रीनगर मार्ग पर ऋषिकेश से लगभग 50 किमी की दूरी पर स्थित संपर्क मार्ग से लगभग दो से तीन किमी पैदल दूरी पर स्थित है। इस विद्यालय के लिए 49 परिवार और लगभग 286 आबादी के तीन गॉव सल्याल, लोरगॉव और कुथ्या सेवित बस्ती हैं। जहॉ बच्चों की संख्या वर्तमान में 20 है। यह विद्यालय मोटर मार्ग से लगभग दो किमी की सीधी चढ़ाई पर बना है और इस विद्यालय तक पहुँचने के लिए अति दुर्गम मार्ग है। सामान्य पहाड़ी भौगोलिक स्थिति में अवस्थित यह विद्यालय लगभग 70 डिग्री के ढलान पर होने के कारण इसे पर्याप्त भवन दे पाना कठिन है।

भौतिक पक्ष

विद्यालय के वास्तविक स्वरूप तक पहुँचने के लिए इसके विभिन्न आयामों पर काम करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः मैंने इसके लिए भौतिक पक्ष से ही शुरूआत की।

1. **पेयजल** :– पेयजल एक ऐसा विषय था जो मुझे सबसे अधिक चिंतित कर रहा था, क्योंकि इससे पठन पाठन प्रकिया अत्यधिक बाधित हो रही थी। बच्चे और भोजनमाता लगभग एक किमी0 नीचे गदेरे से पानी लाते और स्वयं के पीने एवं खाना बनाने का काम चल पाता। इसके लिए सर्व प्रथम मैंने ग्राम पंचायत का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया। उसके बाद अपने विभागीय अधिकारियों के पत्र लिखे। लेकिन कोई बात नहीं बनी। फिर मैंने पेयजल विभाग के एक उच्चाधिकारी से संपर्क किया और अपने विद्यालय में पेयजल की स्थिति उनके सम्मुख रखी। उन्होंने भी पहले तो असहमति व्यक्त की लेकिन मेरे अत्यधिक निवेदन करने के बाद उन्होंने लगभग 600 मीटर प्लास्टिक की पाइप लाइन विद्यालय को देने के लिए हामी भर दी। इस प्लास्टिक के पाइप को मैं स्वयं के किराए से विद्यालय तक ले गया और उसे बिछवाया। आज हमारे विद्यालय में लगभग 6 से 8 महीने पेयजल उपलब्ध रहता है। (क्योंकि ये एक बरसाती स्रोत पर निर्भर है।)

शारीरिक श्रम कम होने से अब विद्यार्थी अधिगम में अधिक रूचि लेने लगे हैं। वहीं एम0डी0एम0 व्यवस्था भी बहुत अच्छे से चलने लगी है।

2. **विद्युतिकरण** :– विद्यालय में विद्युत मीटर लगा था लेकिन विद्यालय में विद्युत उपलब्ध नहीं था। इसके लिए विभाग से प्राप्त धनराशि से विद्यालय में विद्युत फिटिंग कराई। जिससे विद्यालय के कक्षा–कक्ष प्रकाशित और हवादार बन गए। अब विद्यार्थी कक्षाओं में बैठने में सहजता महसूस करते हैं।

3. सौन्दर्यकरण :– भवन के नाम पर विद्यालय में जो कुछ था उसमें दो कक्षा कक्ष, एक कार्यालय, तथा चार शौचालय उपलब्ध थे। इसकी स्थिति अच्छी नहीं थी। मुझे पेंटिग का शौक रहा है। मैंने बाजार से रंग खरीदे और अपने इस शौक को बच्चों के पठन पाठन से जोड़ा।

मैंने सर्व प्रथम विद्यालय में पुताई करवाई और विद्यालय की दीवारों पर बच्चों को रोचक लगने वाले चित्र जैसे छोटा भीम, मिक्की माउस, डोनाल्ड डक, टॉम, लम्बाई मापक, वृक्ष पर स्वर–व्यंजन आदि बनाकर कक्षाओं और कार्यालय को सुंदर और रोचक बनाया।

जिससे बच्चें शरीर के अंगों, सौर मंडल व ज्यामितीय आकृतियों के बारे में, महीनों और दिनों के नाम, पहाड़े, स्वर और व्यंजन आदि आसानी से सीखने लगे।

4. बच्चों के लिए फर्नीचर :– विद्यालय में दो प्लास्टि की कुर्सियां सहित मात्र चार टाट–पट्टियॉ ही मौजूद थी। जिससे बच्चों को धूल मिट्टी में टाट बिछाकर बैठना पड़ता और उनका गणवेश गंदा हो जाता था। इसके लिए मैंने कुछ सामाजिक संस्थाओं से सहयोग मांगा, लेकिन कहीं कोई लाभ नहीं मिला। इसके बाद **मैंने स्वयं के डेढ़ माह के वेतन से बच्चों के लिए बैंच बनवाए।** अब बच्चे सुंदर बैंचों में बैठकर आराम और आनंदरायक तरीके से पठन–पाठन करते हैं।

5. कार्यालय के लिए फर्नीचर :– विद्यालय कार्यालय में न तो कुर्सियॉं थी और न ही मेज। इसके लिए मैंने समुदाय के कुछ प्रतिष्ठित लोगों से संपर्क कर सहयोग करने की बात कही। जिसके बाद स्थानीय निवासी श्री सूरत सिंह जी, श्री भरतसिंह जी और श्री अनिल सिंह जी ने इसके लिए 10,000/– रूपये का सहयोग किया और विद्यालय कार्यालय के लिए भी फर्नीचर की व्यवस्था हो गई।

6. टाई–बैल्ट, जूते–जुराब, आई–कार्ड आदि की व्यवस्था :– मैं बच्चों के स्तर को उच्च कोटि का करना चाहता था। लेकिन विद्यार्थियों के परिवारजनों की आर्थिक स्थिति इसमें बाधक लग रही थी। जिसके बाद मैंने रायवाला (देहरादून) स्थिति एक निजी विद्यालय (सम्पत्ती देवी पब्लिक स्कूल) से संपर्क किया और अपने विद्यालय के बच्चों के लिए विद्यालय की ओर सहयोग की अपील की। जिसके लिए वहॉं की प्रबंधक एवं प्रधानाचार्या महोदया श्रीमती सरस्वती देवी जी ने प्रत्येक बच्चे को प्रतिवर्ष आई–कार्ड, जूते–जूराब, टाई–बेल्ट, हेयरबैण्ड–रिबन आदि सामग्री अनुदान देने को तैयार हो गई। आज हमारे विद्यालय में बच्चे स्वच्छ एवं संपूर्ण गणवेश में विद्यालय आते है और विद्यार्थी क्षेत्र के किसी भी निजी विद्यालय से बहुत ही सुंदर लगते हैं।

7. कंप्यूटर से शिक्षा एवं कंप्यूटर की शिक्षा :– वर्तमान में शिक्षा का आधुनिकीकरण हुआ है। शिक्षा एवं अधिगम को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए आई0सी0टी0, डिजिटल एवं स्मार्ट कक्षाएं, कंप्यूटर आदि प्रयोग हो रहा है। अतः विद्यालय में कंप्यूटर्स की आवश्यकता महसूस हुई।

इसके लिए मैंने ऋषिकेश स्थित एक कंप्यूटर व्यवसायी श्री रॉबिन मान जी से संपर्क किया और उन्होंने विद्यालय की आवश्यकता के अनुरूप तीन कंप्यूटर निःशुल्क उपलब्ध करा दिए।

आज हमारे विद्यालय के बच्चे कंप्यूटर की शिक्षा एवं कंप्यूटर से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। पठन–पाठन अब उनके लिए अधिक रोचक बन गया है। इससे बच्चे की उपस्थिति में गुणोत्तर सुधार हुआ और विद्यालय में छात्र उपस्थिति लगभग 95 प्रतिशत से ऊपर रहने लगी है।

8. जल भंडारण की व्यवस्था :– चूँकि विद्यालय सूदूर पहाड़ी पर स्थित है और पेयजल का समस्या है, इसलिए विद्यालय में प्लास्टिक की दो बड़ी टंकिया खरीदी गई हैं। जिनमें सदैव पानी से भरी रहती है। यह पानी से बर्तन धोने और बच्चों के लिए शौच आदि में प्रयोग किया जाता है।

9. गणवेश में बदलाव किया :– विद्यालय में पारम्परिक एवं घटिया प्रकार के गणवेश के कारण बच्चे फटे पुराने, गंदे और रंग–बिरंगे कपड़े पहनकर आते थे जो कि किसी को भी प्रथम दृष्टया बहुत ही खराब लगते थे। मैंने विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठक बुलाकर उन्हें सरकार द्वारा दी जाने वाली धनराशि से सुंदर व टिकाऊ गणवेश क्रय करने की सलाह दी। जिसे सभी ने सहर्ष मान लिया। आज हमारे विद्यालय के बच्चे क्षेत्र में सबसे अलग और सुंदर दिखाए देते हैं। इससे उनके अंदर आत्मविश्वास देखने को मिला है और वे स्वच्छता के प्रति जागरूक हुए हैं। इससे उनके रहन सहन और दिनचर्या पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा है।

सामाजिक पक्ष

राजकीय सेवा से पूर्व समाज के साथ जुड़कर कई लोगों की सेवा की भावना का लाभ मुझे राजकीय शिक्षक बनने के बाद भी मिला। इसके लिए मैंने कुछ निम्नलिखित प्रयास किए जो विद्यालय में छात्र संख्या बढ़ाने और ग्रामीण बच्चों का शिक्षा के लिए पलायन रोकने में कारगर साबित हुए –

1. विद्यालय का मैदान पक्का किया किया :– विद्यालय का एक छोटा सा ग्राउण्ड धूल–मिट्टी और पत्थरों से भरा हुआ था जिससे बच्चों के साफ कपड़े गंदे हो जाते और उन्हें चोट आदि लगती रहती थी। मैंने विद्यालय में एस0एम0सी0 की बैठक की और उस बैठक में ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों को भी निमंत्रित किया। उन्हें ग्राउण्ड की समस्या से अवगत कराया। जिसके बाद एक स्थानीय निवासी श्री धीरेन्द्र सिंह राणा ने ग्राउण्ड के लिए 20 कट्टे सीमेंट, कुछ ग्रामीणों ने रेत बजरी तथा कुछ ग्रामीण श्रमदान कर ग्राउण्ड को पक्का करने के लिए तैयार हो गए। **इस पुनीत कार्य में अधिकांश वे लोग उपस्थित रहे जिनके बच्चे हमारे विद्यालय में पढ़ते भी नहीं थे।** महिलाएं दो किमी0 की चढ़ाई चढ़कर 20 कट्टे सीमेंट सिर पर लेकर विद्यालय तक आयी क्योंकि विद्यालय तक पहुँचने के लिए घोड़े–खच्चर

2. बच्चों के लिए प्रतिवर्ष आर्थिक सहायता की व्यवस्था :– चूँकि पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्रों में अभिभावक अत्यन्त निर्धन हैं और बच्चों की पढ़ाई उन्हें बोझ सी प्रतीत होती है। उनके इस बोझ को कम करने के उद्देश्य से मैंने ऋषिकेश स्थित एक सामाजिक संस्था 'द डिवाइन लाइफ सोसाइटी' से संपर्क किया और अपने विद्यालय के प्रत्येक बच्चे सहित गॉव व क्षेत्र के सैकड़ों बच्चों को आर्थिक सहायता दिलवाई। इस संस्था द्वारा बच्चे जब तक पढ़ते रहेंगे और उत्तीर्ण होते रहेंगे तब तक प्रतिवर्ष आर्थिक सहायता मिलती रहेगी। मेरे इस प्रयास ने अभिभावकों को कुछ आर्थिक बोझ कम किया और अपने बच्चों का दाखिला हमारे विद्यालय में करने के लिए प्रेरित किया।

3. बचत बैंक खाते खोले गए :– बच्चों में बचत की भावना का विकास करने के उद्देश्य से विद्यालय के प्रत्येक बच्चे का बचत बैंक खाता खोला गया। बच्चों को मिलने वाली आर्थिक सहायता और अभिभावकों द्वारा बच्चों के लिए की गई अल्प बचत इन खातों में जमा की जाती है। एस0एम0सी0 बैठकों में बचत के लिए अभिभावकों को प्रेरित किया जाता है। इसके साथ ही क्षेत्र के कई ग्रामीणों के बचत बैंक खाते खुलवाये गए हैं।

4. अतिरिक्त समय में बच्चों को निःशुल्क पढ़ाना :– मैंने विद्यालय के निकट गांव में ही कमरा किराए पर लिया। जहॉ अतिरिक्त समय में विद्यालय व आसपास के छोटे बच्चों को निःशुल्क पढ़ाता हूँ। इससे विद्यालय के बच्चों के अधिगम स्तर में सुधार हुआ।

5. गॉव में पेयजल की सुविधा :– विद्यालय के निकट 'सल्याल' गांव के ग्रामीणों को भी विद्यालय में उपलब्ध पेयजल पाइप लाइन से 6 से 8 माह पानी उपलब्ध हो रहा है। जिससे उन्हें लगभग डेढ़ किमी0 की चढ़ाई पर सिर में पानी लाने से निजात मिली है। वे भी मेरे द्वारा किए गए प्रयास की सराहना करते हैं।

6. अपने वेतन से क्षेत्र में बच्चों का सहयोग :– अपने विद्यालय और आसपास के 3 आंगनबाड़ी केन्द्रों में 80 जोड़ी पीटी शूज (जूते) बच्चों को वितरित किए।

7. समस्त ग्रामीणों और विद्यार्थियों के आधार कार्ड बनवाये गए :– चूँकि मोटर मार्ग से विद्यालय में आने के लिए खतरनाक मार्ग से लगभग 2 से 3 किमी की दूरी तय करनी पड़ती है। इसलिए वहॉ आधार कार्ड के लिए शिविर लगाना मुश्किल था। लेकिन मैंने ग्रामीणों के सहयोग से विद्यालय में आधार कार्ड बनवाने हेतु शिविर लगवाया। जिसमें सभी विद्यार्थियों के आधार कार्ड के साथ समस्त ग्रामीणों के भी आधार कार्ड बनाए गए।

शैक्षिक पक्ष

विद्यालय में मेरी नियुक्ति से पूर्व कोई भी स्थाई अध्यापक नहीं था। जिससे बच्चों का शैक्षणिक स्तर बहुत ही न्यून था। और अत्यन्त कम समय में इस स्तर में गुणात्मक सुधार लाना एक चुनौती से कम नहीं था। लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता के लिए मैंने कुछ पारम्परिक विधियों से हटकर कुछ अलग प्रयास किए जो काफी प्रभावशाली लगे और गुणात्मक सुधार हुए हैं। जो कि निम्न प्रकार हैं –

1. चित्रों के माध्यम से पढ़ाई :– दीवारों पर बने चित्रों के माध्यम से पढ़ना और पढ़ाना बच्चों को रूचिकर लगता है और बच्चे आसानी से समझ और याद कर लेते हैं। यह प्रयोग एकल विद्यालय मे कार्यरत् शिक्षकों के लिए बहुत प्रभावी हो सकता है। मैंने इन चित्रों को प्रयोग अपने शिक्षण कार्य में किया। जिसके उत्साहजनक परिणाम रहे। कक्षा 1 से 5 के सभी बच्चों को ज्यामितीय आकृतियॉं, उनके उदाहरण, सौरमंडल के ग्रह, गिनती, अक्षर ज्ञान, शरीर के अंगों के नाम आदि न सिर्फ आसानी से याद हो गए बल्कि उनकी समझ भी बढ़ गई।

2. एंड्राइड मोबाइल के प्रयोग से :– गूगल प्ले स्टोर पर बच्चों के लिए हजारों निःशुल्क एप्लीकेशन्स उपलब्ध हैं। इन्हीं एप्लीकेशन्स का प्रयोग करते हुए बच्चों को सहज तरीकों से किसी विषय या बिन्दु को समझाया जा सकता है। मैंने भी कुछ निम्नलिखित प्रमुख एप्लीकेशन्स अपने एंडाइड फोन पर डाउनलोड की –Hindi Alphabet, Top 50 Rhymes, Kids Maths, Children Songs, 50 Hindi Rhymes, ABCD Preschool, Kabir Ke Dohe, Counting 123 आदि। यह शिक्षण को रोचक बनाने में कारगर शाबित हुए।

3. खेलकूद आधारित गतिविधियों का प्रयोग करके :– बच्चे खेल खेल में सहजता से सीखते हैं। लूडो, सॉप–सीढ़ी, मैप रीडिंग आदि जैसे खेलकूद से बच्चों के अधिगम स्तर में सुधार हुआ।

4. प्रार्थना सभा का हिन्दी के साथ अंग्रेजी संचालन :– बच्चे प्रार्थना सभा हिन्दी के साथ अंग्रेजी में भी करने लगे हैं। जिसमें प्रतिज्ञा, प्रार्थना, मॉर्निंग राइम, ग्रुप सांग, कमाण्ड, बच्चों के परिचय, सामान्य ज्ञान के प्रश्नोत्तर आदि प्रमुख हैं। इसने बच्चें अपना परिचय तथा अन्य संक्षिप्त वार्तालाप हिन्दी के साथ अंग्रेजी में देना सीख गए।

5. **संगीत बाद्ययंत्रों एंव एम्प्लीफायर के साथ प्रार्थनासभा का आयोजन** – संगीत प्रार्थना सभा को रोचक बनाते हैं। वहीं ग्रामीण परिवेश में एम्प्लीफायर से प्रार्थना सभा सभी को आकर्षित करती है। जिससे बच्चों में समय पर आने की प्रवृति का विकास होता है। माइक पर लगातार बोलते रहने से बच्चों के अन्दर विभिन्न मंचों पर बोलने का आत्म विश्वास बढ़ता है। हमारे विद्यालय के बच्चे किसी भी प्रश्न का बे–झिझक उत्तर दे देते हैं। इससे उनके अन्दर आत्म विश्वास बढ़ा है। बच्चे माइक पर संगीत धुन के साथ गीत कविताएं आदि गाने लगे है। और इन कार्यों के लिए उनमें उत्साह देखा जा रहा है।

6. **रोचक सहायक पाठ्य–पुस्तकों का पाठ्यकम में समावेश** :– बच्चों को रंगीन और चित्रमय पुस्तकें अपनी पारम्परिक पाठ्य–पुस्तकों से ज्यादा आकर्षित करती है। मैंने इस गुण का लाभ उठाने के लिए सम्पत्ति देवी पब्लिक स्कूल रायवाला की प्रधानाचार्या महोदया श्रीमती सरस्वती देवी जी से संपर्क किया और विद्यालय हेतु निःशुल्क अतिरिक्त पुस्तकें उपलब्ध कराई। बच्चे अपनी पाठ्य–पुस्तकों के साथ साथ इन सहायक पुस्तकों पढ़ने में रूचि लेते हैं और अपने ज्ञान, कौशल आदि गुणों का विकास कर रहे हैं।

कुछ अन्य सामान्य क्रिया–कलाप

✍ **शुद्ध पेयजल का प्रयोग** :– विद्यालय में बच्चे शुद्ध पेयजल ही प्रयोग करें इसका विशेष ध्यान रखा जाता है। इससे उनके स्वास्थ्य में अच्छा प्रभाव पड़ा है। बच्चों की लगभग शत्–प्रतिशत उपस्थिति इस बात का प्रमाण है।

✍ **आकर्षक टी0एल0एम0 का उपयोग** :– आई0सी0टी0, चित्रकला के साथ ही सुन्दर एवं आर्कषक टी0एल0एम0 का प्रयोग विद्यालय में किया जा रहा है ताकि बच्चे विभिन्न सम्बोधों को सुगमता से समझ सकें।

✍ **समुदाय के सहयोग से स्वच्छता एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम** :– समय समय पर सामुदायिक सहभागिता से विद्यालय में स्वच्छता, वृक्षारोपण आदि कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं ताकि विद्यालय के प्रति अभिभावकों और ग्रामीणों का सकारात्मक रूझान बना रहे। वहीं बच्चे भी स्वच्छता एवं पर्यावरण के प्रति जागरूक होते हैं।

✍ **जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान नई टिहरी में आयोजित सेमिनार में प्रतिभाग :–**
सुदूर पहाड़ी पर बने राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुथ्या में किए गए नवाचारी प्रयासों एवं किया–कलापों के कारण आसपास के क्षेत्रों के अलावा जिले एवं जिले के बाहर भी विशिष्ट पहचान मिली है।

✍ **आकाशवाणी केन्द्र नजीबाबाद ने विद्यालय में किए गए प्रयासों का सकारात्मक प्रसारण किया :–** दिनांक 08.05.2016 को आकाशवाणी केन्द्र नजीबाबाद से प्रसारित होने वाले गढ़वाल डायरी कार्यक्रम में विद्यालय में किए गए नवाचारी प्रयासों के बारे में सकारात्मक प्रसारण किया गया। जिसे पर्वतीय अंचल के सभी आकाशवाणी श्रोताओं ने सुना और विद्यालय को एक अलग पहचान मिली।

✍ **जिलाधिकारी महोदया द्वारा प्रसंशा :–** जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान नई टिहरी में

आयोजित कार्यशाला के दौरान विद्यालय में किए गए नवाचार प्रयासों के प्रस्तुतिकरण ने जिलाशिक्षा अधिकारी महोदय, डायट प्राचार्य महोदय आदि को प्रभावित किया। जिसके बाद अगले दिन सपनों की उड़ान कार्यक्रम में जिला अधिकारी महोदया ने विद्यालय में किए जा रहे सामुदायिक, शैक्षिक एवं भौतिक प्रयासों का प्रस्तुतिकरण देखा और बहुत सराहना की। उन्होंने कहा कि "एक कुशल अध्यापक वह है जो कठिन परिस्थितियों में भी आसानी से कार्य कर सके", उन्होंने कहा कि "आपने सीमाओं से बाहर जाकर विद्यालय विकास के लिए कार्य किया है।" उनके ये शब्द सदा मेरे लिए प्रेरणा बने रहेंगे।

✍ **सपनों की उड़ान कार्यक्रम 2015–16 में सम्मान :–**
राजकीय आदर्श विद्यालय नई टिहरी में आयोजित सपनों की उड़ान कार्यक्रम के दौरान इतने बड़े मंच पर मुझे पुरस्कार वितरण के लिए बुलाया जाना मेरे लिए बहुत ही सम्मान की बात थी। जिलाधिकारी महोदया, जिला शिक्षा अधिकारी महोदय एवं प्राचार्य महोदय डायट के साथ मुझे विभिन्न विद्यालयों को पुरस्कार वितरण करने का अवसर मिलना पुरस्कार प्राप्त करने से अधिक सम्मानजनक लगा। और मुझे और अधिक निष्ठा, ईमानदारी और मेहनत करने के लिए प्रेरणा मिली।

✍ **दिनांक 7 से 12 जून 2016 को ग्रीष्मावकाश के दौरान विद्यायल द्वारा निःशुल्क समर कैंप (म्यूज़िक एण्ड डांस क्लासेज) का आयोजन किया गया।**

किसी चीज को समझनें के लिए ज्ञान की आवष्ठयकता होती है,
किन्तु महसूस करनें के लिए अनुभव का होना जरूरी है

विद्या ददाति विनयम्

विद्यार्थियों के
उज्वल भविष्य
हेतु शुभकामनायें

मन्नत प्रोपट्रीज

संचालक

मिन्टू चौहान

आओ सब मिलकर काम करे
हमारा सपना, सबका घर हो अपना

सस्ते से सस्ता प्लाट अधिक
से अधिक समय में

9410932959 सुनील चौहान के सौजन्य से

7533833388,9897750338

श्यामपुर खदरी रोड बैटरी फार्म